© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

प्राथमिक शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि
(स्वामी विवेकानन्द का विशेष योगदान)

Dheerendra Kumar Singh

यूजीसी नेट–जेआरएफ (शिक्षाशास्त्र),
शोध छात्र, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्व विद्यालय फैजाबाद

प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता पर ही सम्पूर्ण शिक्षा की गुणात्मकता निर्भर है, अतः प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान देना आवश्यक है स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के हर पहलू पर विचार किया और उससे सम्बन्धित अपने विचार दिये उनके शैक्षिक विचार में बालक को एक अच्छा मानव बनाने हेतु विद्यालय में प्रार्थना सभा हो जिसमें बालकों में देश प्रेम, आध्यात्मिक ज्ञान एवं नैतिक ज्ञान का विकास हो सके। छात्रों में विश्वबन्धुत्व चरित्र निर्माण, व्यवसायिक विकास आत्मश्रद्धा आत्मत्याग समाज सेवा व सामाजिक विकास करना आवश्यक है छात्र, अभिभावन एवं शिक्षकों में आपसी समन्वय हो साथ ही साथ समय के साथ साथ प्राथमिक शिक्षा में स्मार्ट क्लासेस, सहायक सामग्री का प्रयोग, मनोरंजन, भ्रमण, पाठ्य सहगामी क्रियायें, प्रशिक्षित अध्यापकों का योगदान, स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण, विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग, विद्यालय में पूर्ण सुविधा हो। बच्चे शिक्षा को एक बोझ न समझे। स्कूलों में शिक्षक छात्र का सऐसा होना चाहिए जहां बच्चे अपने जिज्ञासु प्रश्नों को बिना झिण्के पूछ सके एवं शिक्षक अपने छात्रों को शैक्षिक ज्ञान के साथ ही साथ उनके जीवन से जुड़ी समस्याओं का भी समाधान कर सके जिससे छात्र ज्ञान के क्षेत्र में ही निपुण न बने बल्कि उनका सर्वागींण विकास हो चाहे वो शारीरिक हो, या मानसिक, आध्यात्मिक हो, या नैतिक भावात्मक हो या संवेगात्मक हो तभी देश को ज्ञानवान देशभक्त समाज सेवी एवं एक पूर्ण मानव मिल सकता है।

सम्पूर्ण शिक्षा रूपी वटवृक्ष की जड़ प्राथमिक शिक्षा है यह प्राथमिक शिक्षा यदि मजबूत है तो पूरा वटवृक्ष हराभरा रहेगा अन्यथा सूख जायेगा। प्राथमिक शिक्षा को यदि शिक्षा रूपी भवन की नींव कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि नींव पर ही सम्पूर्ण भवन टिका रहता है अतः आवश्यक हो जाता है कि प्राथमिक शिक्षा की गुणात्मक वृद्धि पर विशेष ध्यान दिया जाय। पूर्व से ही देखा जाय तो बड़े–बड़े शिक्षा शास्त्री व विद्वानों जैसे महात्मा गॉधी, स्वामी विवेकानन्द ने अपने शैक्षिक विचारों से शिक्षा की गुणात्मकता पर बल दिया है तो दूसरी तरफ नवचारों द्वारा शिक्षा को सरल व सुगम बनाकर उसकी गुणात्मकता में वृद्धि की जाती है स्वामी जी की शिक्षा पद्धति प्राथमिक शिक्षा की गुणात्मक वृद्धि में सहायक है उनके अनुयायिों ने भारत वर्ष के अनेक प्रांतों में जैसे अण्डमान, अरूणांचल प्रदेश, असम, कर्नाटक, नागालैण्ड, तमिलनाडू में

अनेक विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय स्थापित किये जिनमें स्वामी जी के शिक्षिक विचारों को न केवल पढ़ा जाता है बल्कि उनके शिक्षा दर्शन के व्यवह्त रूप को भी अपनाया जाता है। स्वामी जी के महत्वपूर्ण एवं गहन शैक्षिक विचारों को जनज न तक पहुंचाने के लिए, मनुष्य को एक पूर्ण मानव बनाने के लिए एवं सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण करने के लिए विवेकानन्द केन्द्र विद्यालयों की स्थापना की गयी विद्यालयों में शिक्षण कार्य के साथ–साथ अनेकों पाठ्यसहगामी क्रियायें भी करायी जाती है, विद्यालय भारत में सत्त धावक है जिन्होंने हाथ में मानव निर्माण की पता का फहराई है बच्चों के मन में अनुशासन सेवाभाव, लक्ष्य प्राप्ति हेतु ज्ञानार्जन आदि उदात्त दृष्टि उत्पन्न करने में विवेकानन्द केन्द्र विद्यालयों के समान कुछ संस्थान देश भर में दिखाई देते हैं गुणात्मक शिक्षा इन विद्यालयों की मुख्य पहचान है।

विवेकानन्द विद्यालय में शिक्षा का स्वरूप व उद्देश्य स्वामी जी के शैक्षिक दर्शन पर आधारित है स्वामी के द्वारा कहे विचारों जैसे–"शिक्षा मनुष्य की अन्तनिर्हित पूर्णता की अभिव्यकित है" को अपनाया है शिक्षा की गुणात्मक वृद्धि हेतु छात्रों की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास किया जाता है, अध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक ज्ञान व अच्छे विचारों की प्रेरणा दी जानी है जिसके लिये प्रातः प्रार्थना सभा होती है जिसमें देशभक्ति की प्रार्थना समाचार वाचन एवं अनमोल वचन सम्मिलित है प्रधानाचार्य स्कूल, देश व अन्य विषयों से सम्बन्धित विचारों को छात्र छात्राओं के समक्ष रखते हैं कक्षाओं में प्रेरणा स्त्रोत महान लोगों के चित्र लगाये जाते हैं, जैसे स्वामी विवेकानन्द महात्मागॉधी, रामकृष्ण परमहरा, रविन्द्रनाथ टैगोर एवं चाचा नेहरू आदि। छात्रों को समयानुसार खेल, पीटी आदि करायी जाती है छात्रों का शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिक, संवेगात्मक भावात्मक एवं नैतिक विकास कर सर्वागीण विकास का व्यवह्त रूप देखा जा सका है छात्रों में देशप्रेम, विश्वबधुत्व की भावना, चरित्र निर्माण व्यवसायिक विकास, आत्म, श्रद्धा, आत्मत्याग सामाजिक विकास, समाज सेवा आदि का विकास कर पूर्ण मानव मानाया जाता है। विद्यालय में एक विशेष बोर्ड पर एक सुविचार लिखा जाता है जिसको पढ़कर छात्र–छात्राओं के मन मस्तिष्क पर अच्छे विचारों की छाया पड़ सके।

विद्यालय के शैक्षिक स्वरूप एवं समय का विशेष महत्व दिया जाता है, विद्यालय समय में स्कूल प्रार्थना, कक्षा प्रार्थना, दस मिनट ब्रेक फिर आधा घंटे का ब्रेक फिर दस मिनट का छोटा ब्रेक दिया जाता है विद्यालय में पाठ्य पुस्तकें बिना लाभ हानि के वितरित की जाती है अनुशासित व्यवहार हेतु विशेष ध्यान दिया जाता है छात्रों को पूर्ण गुणवेश में आना अनिवार्य होता है। अभिभावकों को स्कूल समय के बाद या पूर्व ही मिलने की इजाजत है छात्रों को स्कूल समय से पूर्व घर जाना है तो अभिभावकों की लिखित सूचना के बिना नहीं जाने दिया जाता है अभिभावकों को स्कूल के अनिवार्य कार्यक्रमों जैसे–भ्रमण, प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए पूर्ण सहमति देनी चाहिए, साथ ही कुछ कार्यक्रम में आकर छात्रछात्राओं का उत्साहवर्घक भी करें। माता पिता मीटिंग में अवश्य आये, स्कूल द्वारा पूछें गये प्रश्नों का उत्तर अवश्य दें, और सुझाव भी दें। शिक्षा

की गुणात्मक वृद्धि हेतु माता–पिता छात्र–छात्राओं और स्कूल के शिक्षकों के मध्य सम्पर्क एवं समन्वय अवश्य रहना चाहिये। अवकाश का व्यौरा बच्चों की डायरी में अंकित होता है उत्सव समिति द्वारा मनाने योग्य त्यौहारों के विषय में डायरी में अंकित होता है त्यौहार मनाने के लिये माता–तपता को भी आमंत्रित किया जाता है उपस्थिति–प्रधानाचार्य को पूर्व सूचना दिये, बिना लगातार 7 दिन न आने पर स्कूल से निष्कासित भी किया जा सकता है गणतंत्र दिवस, 15 अगस्त को उपस्थित होना आवश्यक है। गृहकार्य छात्रों की डायरी में लिखा जाता है अभिभावक गृहकार्य हेतु बच्चों को निर्देशित करें। हिन्दी और अंग्रेजी का सुलेख लिख कर रोज लायें। छोटी कक्षाओं को अधिक गृहकार्य नहीं दिया जाता है। परीक्षा की भी जानकारी माता–पिता को दे दी जाती है उत्तर–पुस्तिका भी माता–पिता को दिखाई जाती है। विवेकानन्द केन्द्र में उच्च शिक्षण काप्रयोग करके छात्र–छात्राओं को एक अच्छा मानव बनाने पर बल दिया जाता है।

प्राथमिक शिक्षा की गुणात्मक वृद्धि हेतु एक तरफ महान शिक्षा शास्त्रियों एवसं विद्वानों के शैक्षिक विचारों को अपनाया है दूसरी तरफ शिक्षा में समय के साथ–साथ नवाचरों का प्रयोग भी आवश्यक है। स्मार्ट क्लासेस–शिक्षण को रूचिकर, सरल प्रभवी बनाने के लिये कक्षा में एल0ई0डी0, कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर का प्रयोग किया जाये तो यह अत्यन्त उत्तम है। समस्त कक्षायें स्मार्ट क्लासेस न हो तो सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाये–जैसे–चित्र, मानचित्र, चार्ट आकृतियां, जेसे–नमूनों वास्तविकता वस्तुएं, माडल, ग्लोब आदि पाठसहगामी क्रियाओं जैसे–खेलकूद, पी0टी0, व्यायाम, सास्कृतिक कार्यक्रम प्रतियोगितायें, बागवानी, भ्रमण, नाटक एवं नृत्य आदि को महत्वपूण्र स्थान दिया जाना चाहिये। शिक्षकों से समय–समय पर मिलते रहना चाहिए,विद्यालय का वातावरण स्वच्छ सुन्दर व मनमोहक होना चाहिए, विद्यालय की दीवारों पर आकर्षक रंगों का प्रयोग हो एवं कक्षाओं में आकर्षक फर्नीचर होना चाहिए छात्र–छात्राओं के लिए पूर्ण सुविधा होनी चाहिए जैसे आने जाने की उचित व्यवस्था, पीने के स्वच्छ पानी की व्यवस्था, टॉयलेट की व्यवस्था, प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था एवं मनोरंजन की उचित व्यवस्था होना भी प्राथमिक व्यवस्था की गुणवत्ता में सम्मिलित है छोटे बच्चों के लिए इंडोर व आउअ डोर गेम होने चाहिए रंग विरंगें खिलौने बच्चों के मानसिक स्तर के अनुसार होने चाहिए शिक्षण द्वारा ही ज्ञान नहीं दिया जाता बल्कि मनोरंजल व खेलकूद द्वारा भी शिक्षा की गुणात्मकता में भी वृद्धि की जा कसती हैं नवाचरों काप्रयोग समय व आवश्यकता है, नये नये अनुभवों को अपनाना चाहिए शिक्षा की गुणात्मक वृद्धि के लिए सदैव नये नये प्रयोग करते रहना चाहिए, चाहे उनका प्रयोग असफल क्यूँ न हो, नये नये प्रयोग द्वारा ही नयी व अच्छी पद्धति को लाया जा सकता है, विद्यालय में समय समय पर प्रर्दशनियों का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे व अपनी कल्पना व सूझबूझ से अच्छी अच्छी चीजें बनाये एवं प्रर्दशनी में प्रस्तुत करें इससे बच्चों के ज्ञान में वृद्धि होगी संग्राहलय में शिक्षा से सम्बन्धित कुछ नयी व पुरानी चीजों का संग्रह कियाजाना चाहिए जिससे बच्चों को स्रंहालय देखने में अच्छा लगे एवं उनका ज्ञानवर्धन हो।

प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक वृद्धि करने हेतु शिक्षाशास्त्रियों के विचारों को अपनाते हुए समयानुसार नवाचरों का प्रयोग भी करते रहना चाहिए।

संदर्भग्रंथ सूची

- अग्रवाल जे0सी0 'उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षा' अग्रवाल प्रकाशन आगरा
- गुप्ता 1985 'स्वामीजी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन'
- गुप्ता एम0एन0 'महान शिक्षा शास्त्री/साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा
- गुप एस0पी0 'भारतीय शिक्षा का विकास तथा समस्यायें' शारदा पब्लिकेशन, इलाहाबाद
- नायर वी0एस0 1980 'एजूकेशन आइडिमाज ऑफ स्वामी विवेकानन्द' पी0एच0डी0 कर्नाटक यूनिवर्सिटी कर्नाटक
- पुथीनाथ जे0डी0 'एजूकेशनल फिलोसफी ऑफ स्वामी विवेकानन्द'
- यादव निर्मला–विकासो–मुख भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका आगरा' साहित्य प्रकाशन
- सिंह सुशील 1983 'दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का अध्ययन आगरा
- स्वामी विवेकानन्द–शिक्षा श्री रामकृष्ण आश्रम नागपुर
- स्वामी विवेकानन्द–राष्ट्र को आहवान श्री कृष्ण आश्रम नागपुर